10

संसार की घृणा

(यूहन्ना 15)

''यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नही, वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसीलिए संसार तुम से बैर रखता है। ... जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा, है, कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया'' (आयतें 18-25)।

यीशु के जीवन के चकरा देने वाले रहस्यों में से इन प्रश्नों में पाया जाता है: ''संसार ने उसे क्रूस पर क्यों चढ़ाया?'' संसार ने उसे उस उद्धार को जिसे वह लेकर आया था खुली बाहों से, आत्मिक आनन्द और सनातन आभार के साथ ग्रहण क्यों नहीं किया? चाहे उसमें सच है जो मनुष्य को होना चाहिए उसके चरम के रूप में जीवन व्यतीत करके उस सम्पूर्ण भलाई को दिखाया पर संसार उसे सह न सका, अर्थात जब उसने देखा कि वह कौन है और संसार में क्या लेकर आया है, तो इसने तुरन्त उसे नष्ट करने की ठान ली। संसार के अन्धकार ने उस सच्ची ज्योति को जिसे वह लेकर आया था, बुझाना चाहा। यह कैसे हो सकता है? कोई प्रेम के सच्चे और सिद्ध उद्धारकर्त्ता को कैसे ठुकरा सकता है? संसार ने सच्चाई के प्रति घृणा के कारण उसे ठुकरा दिया।

यीशु के लिए इस घृणा की वास्तविकता और कठोरता यीशु की मृत्यु से पूर्व अटारी वाले कमरे में चर्चा का मुख्य विषय था। प्रभु अपने प्रेरितों को भविष्य के लिए अर्थात उन्हें शैतान के कब्जे वाले संसार का सामना करने में सहायता के लिए जो उसका विरोध कर रहा था और उसे शीघ्र क्रूस पर चढ़ाने वाला था, तैयार करना था। प्रेरितों को उसकी तरह संसार में जीवित रहकर यीशु के काम को जारी रखना और उसके मिशन को पूरा करना था। संसार ने भयंकर तरीके से उनका विरोध करना था, जैसे इसने उसका विरोध किया था, इसलिए उन्हें तैयार होना आवश्यक था। यूहन्ना 15:18-25 में हमारे प्रभु ने उन्हें उसके लिए जो आने वाला था तैयार किया।

यीशु दो अन्य चर्चाओं के साथ जो यूहन्ना 15 में मिलती हैं इस विषय पर आया। उसने *उसमें जीवन* जो मिलने वाला था दिखाने के लिए दाखलता और टहनियों के रूपक का इस्तेमाल किया। उन्हें उसमें वैसे ही जीवन मिलना था जैसे डाली को दाखलता में से मिलता है (आयतें 1-8)। इस रूपक से वह *उसमें प्रेम* पर आया जो उन्हें एक-दूसरे के प्रति दिखाना था, यानी वह प्रेम जो उनके शिष्य होने का प्रतीक होना था (आयतें 9-17)। वह जीवन और प्रेम का उनका स्रोत था। उन्हें एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम रखना था जैसे पिता ने उसके साथ रखा था और उसने

उनके साथ रखा था। फिर इस कारण से वह उस सताव और घृणा से उन्हें परिचित कराने लगा जो संसार ने उनके साथ करनी थी (आयतें 18-25)। उन्हें *उसके कारण घृणा* किए जाने के भविष्य का सामना करना था।

अटारी वाले कमरे में उसके द्वारा की गई हर चर्चा का विषय उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण था। कोमलता, सुसु सत्ता और उनके सामने आने वाली कठिनाइयों से पूरी तरह परिचित, उसने उन्हें जीवन के उन अन्धकारमय गलियारों के लिए तैयार किया जिनमें से उन्हें राज्य के आरम्भ का भाग बनकर गुज़रना था।

हम यह मान सकते हैं कि यीशु का चेला बनने का निश्चय करने वाले हर व्यक्ति को अपने नये, अद्‌भुत कार्य में प्रवेश करते हुए अपने आस पास के हर व्यक्ति से पूरा प्रोत्साहन मिला होगा। चेले का जीवन सबसे अच्छा और सबसे अधिक प्रतिफल देने वाला है। इसलिए क्या वह व्यक्ति जो इस जीवन को ग्रहण करना चाहता है अपने आस पास के संसार से उद्धारतापूर्ण सहायता नहीं पाएगा? एक अर्थ में यीशु ने अपने प्रेरितों को चेतावनी दी, ''नहीं, यह इसके विपरीत होगा। संसार आपका विरोध करेगा। आपके साथ वैसे ही घृणा की जाएगी जैसे मेरे साथ की गई थी।'' मसीह के विश्वासी चेले को वैसा ही विरोध सहना पड़ेगा जो यीशु ने सहा और उसे इसके लिए तैयार रहना आवश्यक है। उसे शैतान संसार, और शरीर से घृणा झेलनी पड़ेगी।

पुरानी घृणा

मसीह के चेलों के विरुद्ध यह घृणा बहुत पहले परमेश्वर के विरुद्ध घृणा उठी थी। इस घृणा की सनातन पृष्ठभूमि में शैतान द्वारा परमेश्वर का विरोध छिपा है। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा उसके लिए निराधार बन गई। उसने इसे तुच्छ माना और अपने साथ कई स्वर्गदूतों को लेकर जो अब अनन्त न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया (2 पतरस 2:4)। सच्चाई और धार्मिकता के जनक परमेश्वर ने पाप को संसार में आने दिया ताकि स्वर्गदूत और मनुष्य जो सही है उसकी नैतिक पहचान में बढ़ सकें और अपने विकास में वे सही को चुनकर अपने नैतिक विवेक को इस्तेमाल कर सकें।

परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करके शैतान ने पाप को अस्तित्व में लाया। पाप शैतान से भी बुरा है क्योंकि इसी ने उसे शैतान बनाया है। अदन में पाप के प्रवेश के साथ ''आकाश के अधिकार के हाकिम'' (इफिसियों 2:2) ने इस संसार में धार्मिकता के विरुद्ध अपना युद्ध छेड़ दिया। कुछ हद तक उसने अपने प्रभाव के साथ इस संसार के भण्डारों, इसके आनन्दों, इसके लोगों और इसकी शक्तियों पर कब्जा करते हुए संसार पर अपने प्रभाव से कर लिया है।

इसक अर्थ यह है कि यीशु के विरुद्ध घृणा के पीछे परमेश्वर के प्रति घृणा है। दुष्ट की शक्तियों द्वारा धार्मिकता, सच्चाई और भलाई के लिए उसके प्रेम को कभी सराहा या स्वीकारा नहीं जाएगा। पाप किसी मन को पूरी तरह से तोड़ नहीं सकता कि यह भले जीवन की इच्छा ही न करे, बल्कि इसके विपरीत अपनी बुरी अभिलाषाओं के कारण वास्तव में इससे घृणा करता है।

यीशु के प्रति घृणा

यीशु की सेवकाई के दौरान ईश्वरीय भलाई के प्रति यह घृणा झगड़े के अपने चरम पर पहुंच

गई। पिता के लिए घृणा पूरी सामर्थ के साथ यीशु पर आ पड़ी, क्योंकि वह पिता के साथ एक है। उसे पिता द्वारा संसार में सच्ची रौशनी लाने के लिए भेजा गया था। पृथ्वी पर अपने जीवन में उसमें संसार पर जय पाने की पिता की इच्छा समाई हुई थी। उसके धर्मी जीवन ने संसार की दुष्टता का न्याय किया। परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाते हुए और परमेश्वर का जीवन बिताते हुए और परमेश्वर की सनातन योजना को प्रगट करते हुए उसने संसार की बुरी शक्तियों को इतना भड़का दिया, जितनी वह पहले कभी नहीं भड़कीं थीं।

अटारी वाले कमरे में यीशु ने अपने प्रेरितों पर यह प्रगट किया कि बुराई के साथ विजय पाने वाले मनों के लिए उसकी सेवकाई का क्या अर्थ है। उसने कहा:

> यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया (15:24, 25)।

संसार ने जब मसीह की धार्मिकता को देखा तो यह उसका विरोध करने तो तैयार हो गया।

यीशु के कामों से बिना किसी संदेह के यह साबित हो गया कि वह परमेश्वर की सच्चाई था और परमेश्वर की इस सच्चाई ने बिना किसी संदेह के यह साबित कर दिया कि बुराई का नाश होना आवश्यक है। संसार में यीशु के प्रवेश के कारण, सबसे बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ जो अच्छाई और बुराई, सच्च और झूठ, प्रेम और घृणा के बीच है। सबसे बड़ा पाप उस स्पष्ट सच्चाई को नकारना है जो यीशु ने दी है। संसार बुराई की अंधेरी शक्तियों में और उन्हीं के लिए रहता था, जबकि यीशु आशा, भलाई और प्रेम की तेज़ सामर्थ में और उसके लिए रहा। जब यीशु की रौशनी संसार के ऊपर चमकी तो बुराई की शक्तियों ने पूरी सामर्थ के साथ उसका विरोध किया। रौशनी की मांग थी कि पाप की मृत्यु हो इस कारण पापपूर्ण संसार में ज्योति से घृणा की, ज्योति को नकार दिया और इसे नष्ट करने के लिए अपना हाथ उठाया। इस प्रबल घृणा ने यीशु के विरुद्ध ''मृत्यु तक लड़ाई'' को उकसाया। उसके सिद्ध जीवन ने एक निर्णय के लिए विवश किया। इस युद्ध भूमि में कोई तटस्थ नहीं रह सकता था। हर व्यक्ति को उसके प्रेम या उससे घृणा, या उसकी सेवा या उसे क्रूस पर चढ़ाना, अर्थात या उसकी आराधना या उसकी सामर्थ को शैतान के हवाले कर देना था।

संसार द्वारा उसके कामों को देख लेने के बाद लड़ाई वास्तव में आरम्भ हो गई। या तो उसके कामों को स्वीकारा या फिर उनका विरोध किया जाना आवश्यक था। बुराई की पसन्द विरोध ही था। अंधकार के संसार में देखा कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है और इसने इसे नष्ट करने का ठान लिया। यीशु ने कहा, ''उन्हें बिन कारण मुझ से बैर किया।'' वह सच्चाई, जीवन और प्रेम को छोड़ और कुछ नहीं था और उसमें कोई पाप नहीं था। यीशु का विरोध करने वालों के पास ऐसा करने का कोई जायज़ कारण नहीं था। यीशु का पूरा विरोध ज्योति से बढ़कर बुराई को चुनने की इच्छा के कारण हुआ। यीशु के साथ ऐसा हुआ और उस दुष्ट द्वारा चलाए जाते इस संसार में ऐसा ही होता रहेगा।

यीशु के अनुयायियों के प्रति घृणा

मसीह का अनुयायी होने के कारण चेले को भी वही घृणा सहनी पड़ती है जो मसीह को सहनी पड़ी। जो बात पिता के लिए सत्य थी वही यीशु के लिए भी थी; और जो यीशु अर्थात स्वामी के लिए है वही उसके पीछे चलने वाले किसी भी चेले के लिए है। जिस घृणा के कारण यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, वही घृणा अलग-अलग समयों में अलग-अलग रूपों में उस चेले पर पड़ती है जो यीशु की तरह रहता और सेवा करता है। जिस प्रकार से वह संसार में था, वैसे ही चेला भी संसार में होगा। यीशु ने कहा:

> यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नही, बरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिए संसार तुम से बैर रखता है। जो बात मैं ने तुम से कह थी, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो: यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारे भी मानेंगे। परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजने वाले को नहीं जानते (15:18-21)।

यीशु ने अपने प्रेरितों को संसार द्वारा उन से घृणा किए जाने पर चकित न होने को कहा, बल्कि इस घृणा का कारण समझने को कहा। जब हमारा ऐसा विरोध होता है तो हमें यह समझना आवश्यक है कि हमारे साथ घृणा मसीह के लोग होने के कारण हो रही है। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि हम से घृणा करने वाले लोग नहीं जानते कि पिता कौन है या पिता वास्तव में संसार में क्या कर रहा है। यदि यीशु के प्रेरित संसार के होते तो संसार उनसे घृणा न करता। संसार अपनों से घृणा नहीं करता। करे भी क्यों? (देखें 15:19.) परन्तु जब प्रभु ने प्रेरितों को संसार में से बुलाया और फिर पापियों को सच्चाई और जीवन देने की पेशकश करके इसे दोषी ठहराने के लिए उन्हें वापस भेजा तो संसार में प्रेरितों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। मसीह के सेवक को अपने प्रभु की तरह कुछ न कुछ सहना पड़ेगा। यीशु न कहा ''यदि उन्होंने मुझे सताया तो वे तुम्हें भी सताएंगे'' (15:20)।

क्या संसार का कोई व्यक्ति उस संदेश को सुनेगा जो यीशु के चेले उसके पास ला रहे हैं? हां, कुछ सुनेंगे। प्रभु ने कहा, ''यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।'' जिस प्रकार कुछ लोगों ने यीशु को स्वीकार किया, वैसे ही कुछ लोग प्रेरितों की शिक्षाओं को मानेंगे। कुछ लोग आज वचन सुनाए जाने पर इसे ग्रहण करेंगे। तौभी संसार अपने आप में अपनी सारी बुराई के साथ अर्थात अपने बुरे मार्गों और अभिलाषाओं के साथ परिवर्तित नहीं होगा। यह आक्रमण की मुद्रा में जो इसे सुधारे और उसे प्रकाश में लाए, अपने बचाव में ही रहेगा।

सारांश

संसार में से इसमें वापस जाकर संसार को अपने आप से बचाने की कोशिश करने के लिए भेजने के लिए बचाया गया है। यीशु ने अपने चेलों को भेजा और हमारे लिए जाना आवश्यक है। हम प्रेम में जाते हैं पर हम से इस कारण घृणा की जा सकती है और हमें तुच्छ माना जा सकता

है। कुछ लोग सच्चाई के पास आएंगे, कुछ इसे नज़रअन्दाज़ कर देंगे और अन्य इससे घृणा और इसका विरोध करेंगे। कोई चेला पसन्द नहीं करता है कि उससे घृणा की जाए, पर हम जानते हैं कि चाहे कई बार हमें हिंसक घृणा का भी शिकार होना पड़े पर संसार को उद्धार का संदेश अर्थात सुसमाचार देना ही है।

''मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। और उन के लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूं ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं'' (यूहन्ना 17:14-19)।

''संसार का अपना ईश्वर अर्थात अपना धर्म है, जिसे पहले अदन के फाटकों पर कैन ने बनाया था; अपना राजकुमार और अदालत और क़ानून हैं; अपने सिद्धांत और नियम हैं; अपना साहित्य और सन्तुष्टि हैं। यह एक विशिष्ट आत्मा के आधीन है जिसे यह प्रेरित [1 यूहन्ना 2:15, 16] वासना या शैली, ... संक्रमण, प्रभाव, दिखलावा, जादू टोना कहता है; जो हमें चुम्बक पत्थर के काल्पनिक पहाड़ का स्मरण कराता है जो बर्तनों को अपनी ओर आकर्षित करता था क्योंकि उनमें लोहा होता था, और लकड़ियों में से वह कीलें निकाल लेता था, जिससे पूरा ढांचा असहाय, बेडौल होकर हवा में बिखर जाता। संसार के उपासक [पूजा करने वाले] अपने आपको इन्द्री की बातों से अर्थात उन बातों से जो देखी जाती और अस्थाई हैं जोड़ते हैं। वे निर्धनता और कष्ट और अपमान की घोर पीड़ा में हैं; इन्हें वे अपनी मुख्य बुराइयां मानते हैं, जिनसे किसी भी क़ीमत पर बचना आवयक है; जबकि वे मुख्य भलाई, धन और आनन्द और सम्मान को महत्व देते हैं।[1]''

टिप्पणी

[1]एफ़. बी. मेयर, *गॉसपल आफ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1950), 275-76.